पात्रकेसरी या पात्रस्वामी

जीवन-परिचय : कवि और दार्शनिक के रूप में पात्रकेसरी का नाम विख्यात है। आचार्य जिनसेन ने आदिपुराण में इनके गुणों का स्मरण किया है।

पात्रकेसरी का जन्म उच्चकुलीन ब्राह्मण वंश में हुआ था। ये राजा के महामात्य पद पर प्रतिष्ठित थे। ब्राह्मण समाज में इनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी।

आराधना कोश के अनुसार—पात्रकेसरी अहिच्छत्र के अवनिपाल राजा के राज्य में 500 ब्राह्मणों में सबसे प्रमुख थे। इस नगर में तीर्थंकर पार्श्वनाथ का एक विशाल चैत्यालय था। पात्रकेसरी प्रतिदिन उस चैत्यालय में जाया करते थे।

एक दिन चैत्यालय में चारित्रभूषण मुनि के मुख से स्वामी समन्तभद्र के 'देवागम' स्तोत्र का पाठ सुनकर ये आश्चर्यचकित हुए। पात्रकेसरी ने अपनी विलक्षण प्रतिभा द्वारा स्तोत्र कण्ठस्थ कर लिया और अर्थ विचारने लगे। जैसे-जैसे स्तोत्र का अर्थ स्पष्ट होने लगा वैसे वैसे उनकी जैन तत्त्वों पर श्रद्धा उत्पन्न होती गयी और अन्त में उन्होंने जैनधर्म स्वीकार कर लिया। परन्तु उन्हें अनुमान प्रमाण के बारे में कुछ सन्देह हुआ। वे सोच ही रहे थे कि पद्मावती देवी का आसन कम्पायमान हुआ। उन्होंने पात्रकेसरी का सन्देह दूर करने के लिए पार्श्वनाथ की मूर्ति के फण पर हेतुलक्षण का एक श्लोक अंकित किया—

अन्यथानुपपन्नत्वं यत्र तत्र त्रयेण किम्।
नान्यथानुपपन्नत्वं यत्र तत्र त्रयेण किम्।।

प्रात:काल जब पात्रकेसरी ने मंदिर में प्रवेश किया तब वहाँ उन्हें फण पर अंकित उस श्लोक को देखकर उनकी शंका दूर हो गयी और संसार के पदार्थों से उनकी उदासीनता बढ़ गयी। उन्होंने दिगम्बर मुद्रा धारण कर ली। आत्म-साधना करते हुए उन्होंने विभिन्न देशों में विहार किया और जैनधर्म की प्रभावना की।

आचार्य समन्तभद्र स्वामी के बाद पात्रकेसरी को द्रमिल-संघ का प्रधान आचार्य माना जाता है। पात्रकेसरी का व्यक्तित्व तर्क के क्षेत्र में विशेष प्रसिद्ध रहा है। आप न्याय के निष्णात विद्वान थे।

पात्रकेसरी का समय ईसा की छठीं शताब्दी के उत्तरार्ध और सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध का माना जाता है।

रचना-परिचय : इनकी दो रचनाएँ मानी जाती हैं—

1. **पात्रकेसरी स्तोत्र :** इस स्तोत्र का दूसरा नाम 'जिनेन्द्र गुण संस्तुति' भी है। समन्तभद्र के स्तोत्रों के समान यह स्तोत्र भी न्यायशास्त्र का ग्रन्थ है। इस स्तुति-ग्रन्थ में 50 श्लोक हैं, परन्तु यह एक महत्त्वपूर्ण कृति है। अर्हन्त भगवान की अवस्था का बहुत ही सुन्दर वर्णन इसमें है।

2. **त्रिलक्षण कदर्थन :** इस ग्रन्थ में बौद्धों द्वारा प्रतिपादित अनेक मतों का खण्डन कर जैन मत को प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया है।